सत्याग्रहकी मर्यादायें

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १७ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ४६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ६ फरवरी, १९५४

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

गांधीजी और अुनकी कार्यपद्धति*

२

मैंने पहले-पहल गांधीजीको देखा, तब मैं २० सालका था और अेम० अे० का अध्ययन कर रहा था। मैं कांग्रेसके वार्षिक अधिवेशनमें शरीक होने गया था, जो सन् १९१९ में जलियानवाला बागके कत्लेआमके तुरन्त बाद हुआ था।

जनरल डायरने हजारों निहत्थे लोगोंकी भीड़ पर गोली चलानेका हुक्म दे दिया था, जो जलियानवाला बागकी चारों ओर दीवालोंसे घिरी हुअी जगहमें फंस गये थे। जनरल डायरकी राअिफलोंसे लैस टुकड़ी बागके अेकमात्र दरवाजे पर खड़ी हो गअी, ताकि कोअी निकल न सके। गोलीबार तब तक जारी रहा, जब तक कारतूस खतम न हो गये। रेलवे स्टेशनसे मैं अपने अेक मित्रके घर गया, जहां मुझे ठहरना था। मैं दो जीनोंके बीचकी-जगह पहुंचा था कि मैंने राष्ट्रीय नेताओंके अेक प्रतिनिधिमंडलको — जिनमें से हरअेकका अुन दिनों हम नौजवानों पर जादूका-सा प्रभाव पड़ता था — नीचेसे अूपर आते देखा। अुनमें गांधीजी भी थे। अुन्हें शहरके प्रमुख व्यापारियोंसे मिलना था। अितने आदरणीय नेताओंका अेक साथ दर्शन करके मैं तो आनन्दविभोर हो गया। मैंने अपने-आपको अेक किवाड़की आड़में छिपा लिया। सारे सम्मान्य नेता मेरे पाससे गुजरे और मैं अपने अुस सुरक्षित स्थानसे अुनकी बातचीत सुनने लगा। कांग्रेसने यह तय किया था कि जलियानवाला बागकी जगह खरीद ली जाय और अुसे भारतके प्रथम अहिंसक स्वातंत्र्य-युद्धके पहले शहीदोंकी यादमें राष्ट्रीय स्मारकका रूप दिया जाय। लेकिन अिसके लिअे जरूरी पैसा मिल नहीं रहा था। नेताओंने किसीके प्रभावमें न आनेवाले व्यापारियोंके साथ अपनी थैलियां खोलनेके लिअे अनेक तरहकी दलीलें कीं, अुनसे विनती की और अुन्हें राजी करनेका भी खूब प्रयत्न किया, लेकिन कोअी नतीजा न निकला। अन्तमें गांधीजी बोले। अुन्होंने न तो व्यापारियोंकी खुशामद की और न भावुक अपीलों द्वारा अुनकी भावनाओंको अुभारनेका प्रयत्न किया। अुन्होंने व्यापारियोंसे केवल अितना ही कहा कि राष्ट्रने अेक बार जो पवित्र प्रतिज्ञा कर ली है, अुसके भंगका मैं साक्षी नहीं बनूंगा। अगर आप आगे आकर जरूरी पैसा अिकट्ठा करनेमें मदद नहीं करेंगे, तो मैं अपना आश्रम बेच डालूंगा और पैसेकी कमी पूरी कर दूंगा। अुनके स्वरमें आग्रह और वाणीमें दृढ़ निश्चयका भाव था, जिनका स्रोत मैंने बादमें अुनके प्रतिज्ञाओंकी पवित्रताके अुस तत्त्वज्ञानमें खोजना सीखा, जिसका वे न केवल सत्यकी शोधके, बल्कि अुसे जीवनमें पूर्णतया अुतारनेके प्रयत्नके अंगके रूपमें दृढ़तासे पालन करते थे। अुन सादे शब्दोंके पीछे रहे चट्टानकी तरह पक्के निश्चयने व्यावहारिक दृष्टिवाले व्यापारियोंमें वह शक्ति पैदा कर दी, जिससे वे परिस्थितिको तुरन्त समझ गये और वहीं अुन्होंने जरूरी रकम पूरी कर देनेका वचन दिया। व्यापारी समाजने अिससे राष्ट्रीय निर्णयोंकी पवित्रताका पहला पाठ सीखा, जो भारतके भावी स्वातंत्र्य-युद्धका मुख्य आधार बन गया।

अुस साल कांग्रेस अधिवेशनमें ब्रिटिश सरकार द्वारा घोषित वैधानिक सुधारोंसे सम्बन्ध रखनेवाले प्रस्ताव पर खासी लड़ाअी हुअी। प्रस्तावके मसौदेमें अुन सुधारोंको "अपर्याप्त, असन्तोषप्रद और निराशाजनक" बताया गया था। प्रस्ताव पेश करनेवाले दलकी यह हिमायत थी कि विधानकी अपर्याप्तता सिद्ध करनेके लिअे प्रस्ताव स्वीकार कर लिया जाय। प्रस्ताव पेश करनेवाले व्यक्तिने समझाया, "हम अुसे पसन्द करें या न करें — ये शब्द प्रस्तावमें जानबूझकर छोड़ दिये गये हैं, क्योंकि यह कहनेकी जरूरत नहीं कि ब्रिटिश पार्लियामेन्टके हर विधान या कानूनका अिस देशमें पालन किया जायगा। अगर हम ब्रिटिश राष्ट्रके वफादार प्रजाजन हैं," — जो कि हम नहीं थे, जो कि प्रस्ताव पेश करनेवाले सदस्य और अुनके दलके लोग भी नहीं थे, जो कि अुस समय राष्ट्रीयताका कोअी भी सच्चा अुपासक हो ही नहीं सकता था — "तो पार्लियामेन्ट द्वारा पास किये हुअे हर कानूनका पालन करनेके लिअे हम बंधे हुअे हैं।"

गांधीजीने प्रस्तावमें अिस तरहकी संदिग्ध चीजका विरोध किया। अुन्होंने वक्ताकी बातका विरोध करते हुअे कहा कि वफादार प्रजाको वास्तवमें ही पार्लियामेन्टके हर कानूनका पालन करना चाहिये, भले वह सही हो या गलत। "मैं यहां यह घोषणा करता हूं कि मैं सम्राटकी आज्ञाओं और कानूनोंका तभी तक पालन करूंगा, जब तक वे मेरे दिल और दिमागको अुचित मालूम होंगे; लेकिन अुन आज्ञाओं और कानूनोंके पालनके लिअे मैं बंधा हुआ नहीं हूं, जिनके खिलाफ मेरी अन्तरात्मा विद्रोह करती है। मैं अुन्हें तोड़ूंगा और अुसकी सजा भोगूंगा। अगर कोअी सुधार या कानून निराशाजनक है, तो अुसे माननेसे स्पष्ट अिनकार कर देना चाहिये। लेकिन अगर हम अुसे स्वीकार करते हैं, तो अुसे हमें अच्छी तरह आजमा देखना चाहिये। किसी तरहके दुराव-छिपावके साथ अुसे स्वीकार करनेके मैं खिलाफ हूं। मैं हिन्दुस्तानके अेक कोनेसे दूसरे कोने तक जाअूंगा और लोगोंसे कहूंगा कि अगर हम दोस्तीके बढ़ाये हुअे हाथका अुचित जवाब नहीं देंगे, तो हम अपनी संस्कृतिके सच्चे अुपासक नहीं कहे जायंगे, और हम अपनी अूंची स्थितिसे नीचे गिर जायंगे।" अिन शब्दोंके साथ गांधीजीने भावावेशमें अपनी सफेद टोपी सिरसे अुतारकर मंच पर फेंक दी और नंगे सिर विरोधी पक्षसे अपील करने लगे। अिसका नतीजा

* युनाअिटेड स्टेट्स अेज्युकेशनल फाअुण्डेशनके विद्वानोंके सामने दिये गये भाषणकी दूसरी किस्त। अिसका पहला भाग पिछले अंकमें छपा है।

www.vinoba.in

यह हुआ कि अैन मौके पर दोनों दलोंका समझौता हो गया। गांधीजीके संशोधनका सार स्वीकार कर लिया गया।

यहां भी विचार, वाणी और कर्ममें सत्यके आदर्श तक — जिसे अुन्होंने अपने जीवनका आधार बनाया था — पहुंचनेके अुनके अथक प्रयत्नकी शक्तिने ही अुनके शब्दोंमें वह अदम्य शक्ति भर दी, जिससे विरोधी पक्षके तर्कोंकी दीवार अुसी तरह टूटकर छिन्न-भिन्न हो गअी, जिस तरह हवाके सामने भूसी। अिस विषयमें परस्पर विरोधी चीज तो यह थी कि यद्यपि गांधीजीने संयम और समझौतेकी सिफारिश की थी, लेकिन अुसके पीछे अेक विद्रोहीकी भावना थी — अैसा विद्रोही जिसकी बराबरीका क्रांतिकारी हिन्दुस्तानने अुससे पहले दूसरा नहीं देखा था।

अुस समय अिससे भी ज्यादा गांधीजीकी जिस बातकी मुझ पर छाप पड़ी, वह थी जनरल डायरको नौकरीसे बरखास्त करने पर अुनका जोर, यद्यपि अुन्होंने अुस पर मुकदमा चलानेकी मांगका विरोध किया। अुनके भाषणकी संक्षिप्तता और शक्ति नेपोलियनकी याद दिलाती थी, जिसका लगभग अेक-अेक शब्द आज भी मैं याद कर सकता हूं। अुन्होंने सभाके सामने पेश किये हुए प्रस्तावको अधिकसे अधिक महत्त्वपूर्ण बताकर श्रोताओंसे कहा कि हमारी भावी सफलताकी कुंजी अिस प्रस्तावको हृदयसे मान लेनेमें, अिस प्रस्तावके पीछे रहे सत्यको हृदयसे स्वीकार कर लेनेमें और अुस पर तहेदिलसे अमल करनेमें है। "अिस प्रस्तावके पीछे रहे सत्यको हम नहीं समझेंगे, तो हमारी असफलता निश्चित है। . . . मैं कबूल करता हूं कि सरकारकी तरफसे लोगोंको खूब अुभाड़ा गया और चिढ़ाया गया था। सरकार पागल हो गअी थी, लेकिन हमारे लोग भी तो पागल हो गये थे। मेरा कहना यह है कि पागलपनके बदले पागलपन मत कीजिये, बल्कि पागलपनका बदला बुद्धिमानीसे और समझदारीसे चुकाअिये। अिससे स्थिति आपके हाथमें आ जायगी।"

कुछ हफ्ते बाद मैं गांधीजीसे मुलाकात मांगनेके लिअे लाहौरके अुनके निवास-स्थान पर गया। फौजी कानूनके मुकदमे अुन दिनों जोरोंसे चल रहे थे और जिन लोगों पर मुकदमे चलते थे अुनके मित्रों और रिश्तेदारोंकी भीड़ हमेशा गांधीजीके निवास-स्थान पर लगी रहती थी। जब मैं पहुंचा तब अैसे ही अेक प्रतिनिधिमंडलसे अुनकी बातचीत चल रही थी। अुस मामलेमें किसीको कोअी आशा नहीं थी, क्योंकि अभियुक्त पर राजनैतिक हत्याका आरोप था। अुन दिनों राजनैतिक हत्याके अपराधीको जीवन-दान देनेकी सिफारिश करनेकी हिम्मत भला कौन कर सकता था? अभियुक्तके मित्र और रिश्तेदार निराश हो चुके थे। लेकिन गांधीजीने अुन्हें ढाढ़स बंधाते हुअे कहा: "मुझे अुस मामलेकी सब हकीकतें बता दो और अगर तुम्हारे आदमीने कोअी गलती की है, तो अुसका साफ अिकरार मेरे सामने करो। मैं बुरेसे बुरे हत्यारेको भी फांसीसे बचाना चाहूंगा। मेरे आश्रममें अैसे कअी लोग हैं, जो कीमती सहयोगियोंकी तरह मेरे साथ काम करते हैं। मैंने हृदय-परिवर्तन करके अुन्हें पूरी तरह अहिंसक बना लिया है।" यहां राजनैतिक क्षेत्रमें मुझे अेक नअी ही चीज देखनेको मिली। अेक धर्मनिष्ठ पुरुष मुख्यतः आध्यात्मिक दृष्टिकोणसे राजनैतिक समस्याओंको हल कर रहा था। अुनकी वाणीमें फिर अैसी कोअी चीज मैंने अनुभव की — दयाका गुण — जो किसीको भी अपने दायरेसे बाहर नहीं मानती थी और बड़ेसे बड़े अपराधीको भी अुद्धार या क्षमादानका पात्र समझती थी; अुनकी वाणीमें किसी अपार शक्तिके छिपे स्रोतके पास पहुंचनेका भाव था, जो शक्ति किसी भी बातको असंभव नहीं मानती और जिसके सामने सारी बाधायें और रुकावटें खतम हो जाती हैं, अगर कोअी सत्य और न्यायके आधार पर खड़ा हो। गांधीजीकी अिस विशेषताने मुझे पकड़ लिया। अुसी शक्तिके भंडारने, जो जनरल डायरके लिअे क्षमादानकी अुनकी अपीलमें फूट पड़ा था, अब अुनमें यह विश्वास पैदा कर दिया कि वे शक्तिशाली ब्रिटिश सरकारके सामने राजनैतिक हत्याके अभियुक्तको भी जीवन-दान देनेकी सफलतापूर्वक वकालत कर सकते हैं।

(अंग्रेजीसे) **प्यारेलाल**

दवाअियां और आहार

मैं हिपोक्रेटीसके अिस आदेशको मानता हूं: "भोजनको अपनी दवाअी मानो और दवाअीको अपना भोजन मानो।" आखिरमें तो शारीरिक स्वास्थ्य हमारा लगभग शत-प्रतिशत वैसा ही होता है जैसा हम खाते हैं। अिसलिअे ज्यादातर डॉक्टरोंकी बीमारीका अिलाज करनेकी दृष्टि अिस अर्थमें गलत होती है कि वे बीमारीके कारणोंकी खोज करने और आहार तथा रहन-सहनकी दूसरी आदतोंमें परिवर्तन करानेके बजाय बीमारीके लक्षणोंकी खोज करते हैं और दवाअीके नुस्खे लिखते हैं। दवाअियां कष्ट कम कर सकती हैं और रोगी शरीरको बरसों तक सहारा देकर टिकाये रख सकती हैं, लेकिन वे रोगको मिटाती नहीं। हमें जरूरत स्वस्थ जीवन बितानेकी है, और स्वस्थ जीवन ९० प्रतिशत स्वस्थ भोजन पर निर्भर करता है।

स्वास्थ्यके खयालसे आहारका चुनाव और आहारकी मात्रा दोनोंका अेकसा महत्त्व है। ४० बरससे अूपर अुर्सा हो गया, मैं प्रतिदिन दो बार ही भोजन करता हूं। अिस आदतसे पेटको रोज पूरा आराम मिलता है। अिस तरह वह भोजनकी अेक सीमित निश्चित मात्रासे ज्यादा पोषण ग्रहण करता है। अिस प्रकार अिसमें चौतरफा किफायतशारी होती है। मैंने बुद्धिपूर्वक यह भी समझ लिया है कि शक्कर, स्टार्च और प्रोटीन — खास तौर पर शक्कर — सीमित मात्रामें ली जाय और ताजे फल, हरी पत्तेदार भाजियां तथा सलाद काफी मात्रामें लिये जायं और मिठाअियों व स्टार्च भरे 'पुडिंग' की जगह ताजे फल खाये जायं। पूरे गेहूंकी ब्रेड (पाव रोटी) पूर्ण स्वास्थ्यकी दूसरी बुनियादी जरूरत है। स्वास्थ्य और सशक्त शरीर, पूर्णता और आत्म-संयमकी भावना खाने-पीने और दूसरी आदतोंमें हमेशा मेरा अचूक मार्गदर्शन करती है। अिस सिद्धिके साथ शरीरके किसी भी सुखकी तुलना नहीं की जा सकती।

जमीनसे लेकर मनुष्य तक जीवनके हर स्तर पर कम ज्यादा प्रमाणमें सजीव या निर्जीव चक्रमें काम किया जा सकता है। ज्यादातर लोग दोनों चक्रोंमें काम करते हैं, लेकिन अिसे महसूस नहीं करते; क्योंकि आजकल कअी तरहके रसायन अनाज पैदा करने और खाद्य वस्तुअें तैयार करनेमें तथा दवाओंके रूपमें काममें लिये जाते हैं। सफेद ब्रेडके कुदरती क्षार और विटामिन पहले नष्ट कर दिये जाते हैं और बादमें रासायनिक विटामिन जोड़ कर अुसे पोषक बनाया जाता है। बनावटी मीठे पेय, जिनका आजकल अितना प्रचलन है, रक्तके प्रवाहको रोकते हैं और कमजोर बनाते हैं और अपने शिकारोंको दवाअियोंकी शरण लेनेको मजबूर करते हैं।

कुछ वर्ष पहले मैंने लन्दनमें 'ट्रेड कन्फेक्शनरी अेक्जिबिशन'का निमंत्रण स्वीकार किया था। वह खाद्य पदार्थोंके विषयमें हमारे पतनका अेक ज्वलन्त पदार्थ-पाठ था। प्रदर्शनीमें सजाकर रखी हुअी बोतलों, घड़ों, बरनियों और रकाबियोंमें 'फलों' के पेय, मुरब्बे, मलाअी, स्वादिष्ठ मिठाअियां और अंडों, मक्खन, दूध वगैराकी जगह लेनेवाली चीजें और खाद्य पदार्थोंको सुरक्षित रखने-

www.vinoba.in

वाली दवाअियां भरी थीं; मुझे वे चीजें चखनेके लिअे कहा गया और बड़े हर्षसे अिस बातका विश्वास दिलाया गया कि अिनमें से हर चीज 'कृत्रिम' है। यह बदलेकी भावनासे कुदरत पर पाअी हुअी विज्ञानकी विजय थी!

दवाअीकी आदत दिनोंदिन बढ़ रही है और अेक सामाजिक भयका रूप ले रही है। अकेले नेशनल हेल्थ सर्विस अेक्टके मातहत हर साल २४,०००,००० से ज्यादा नुस्खे बनाये जाते हैं, जिनका खर्च ५०,०००,००० पौंडसे ज्यादा आता है। हाअुस ऑफ कामन्स (लोकसभा) के सामने जुलाअी १९५३ में कहा गया था कि व्यक्तिगत मालिकीकी तैयार की हुअी ८०० दवाअियोंमें से ६५० की अुपयोगिताके विषयमें शंका है। 'मान्चेस्टर गार्डियन' (१-८-'५३) में छपे 'बिस्तरके पासकी दवाअियां' नामक लेखमें कहा गया था: "१० वर्षमें मानसिक शिथिलता पैदा करनेवाली दवाअियोंके जहरीले असरके कारण अचानक होनेवाली मृत्युओंकी संख्या तिगुनी बढ़ गअी है; और अिन दवाओंसे होनेवाली आत्महत्याओंकी संख्या अिससे भी ज्यादा चिन्ताजनक हद तक पहुंच गअी है। अैसी किसी दवाकी नियत मात्रासे अधिक खुराक लेकर आत्महत्या करना बहुत ज्यादा आम बात हो गअी है; अैसे मामलोंकी गिनती कोयलेकी जहरीली गैस सांस द्वारा भीतर पहुंचाकर आत्महत्या करनेके मामलोंसे दूसरे नम्बर पर होती है। . . . अेक दिये हुअे हिस्सेमें नेशनल हेल्थ सर्विसके नुस्खोंकी जांच करनेसे मालूम हुआ है कि अैसे सारे नुस्खोंमें १० प्रतिशत नुस्खे अेक या दूसरे रूपमें मानसिक शिथिलता पैदा करनेवाली दवाओंके ही कहे जा सकते हैं।" अूपरके लेखमें 'प्राक्टिशनर' नामक पत्रमें छपे डॉ० थामस अेन० मार्गेनके अेक लेखका यह हिस्सा अुद्धृत किया गया है: "अभी कुछ समय पहले तक व्यापक रूपमें यह महसूस नहीं किया गया था कि मानसिक शिथिलता या सुस्ती या निश्चेष्टता पैदा करनेवाली दवायें आदमीकी वृत्तिमें अैसे परिवर्तन कर देती हैं, जिनका दुरुपयोग किया जा सकता है। नींद पैदा करनेवाली मात्रामें ली जायं, तो ये दवायें मानसिक शिथिलता और प्रसन्नताका वैसा ही भाव पैदा करती हैं, जैसा कि शराबसे पैदा होता है।"

अिस लेखका जवाब देनेवाले दो डॉक्टरोंने यह दावा किया था कि आधुनिक जीवनके बढ़ते हुअे दबावों और तनावोंके बीच अिस तरहकी मानसिक शिथिलता पैदा करनेवाली दवाअियां जरूरी हैं। मेरे अिन निबंधोंमें जिस बुनियादी क्रांतिकी हिमायत की गअी है, अुसकी दलीलोंमें अेक दलील आधुनिक जीवनके बढ़ते हुअे तनावोंको दूर करनेकी भी है। अिस तरहके तनाव हमारे आजके जीवनमें हैं, यह फूड अेज्युकेशन सोसायटीके अुपाध्यक्ष डॉ० फ्रेन्कलिन बिकनेलने भी सिद्ध किया है, जिन्होंने लन्दनमें हुअी नेशनल विमेन सिटिजन्स अेसोसियेशनकी वार्षिक परिषद्में कहा था कि ब्रिटेनमें हर रोज १०,०००,००० अेस्पिरिनकी गोलियां खाअी जाती हैं। (यॉर्क्स पोस्ट, १४-५-'५३)

आजकल ब्रिटेनमें सैकड़ों रासायनिक दवाअियां कृत्रिम खाद्य पदार्थोंकी रक्षा या अुनके पोषक तत्त्व बढ़ानेके लिअे काममें ली जाती हैं; और अमेरिकामें तो अिनकी संख्या ब्रिटेनसे दुगुनी है।

अिस तरह यह रासायनिक चक्र बढ़ रहा है। हम शायद ही यह जानते हैं कि हम क्या खा रहे हैं। मैंने हालमें कुछ सुन्दर और आकर्षक गाजरोंके बारेमें पढ़ा था, जिनके तत्त्वोंका विश्लेषण करने पर मालूम हुआ कि अुनमें 'केरोटिन' नामक विटामिनका नामोनिशान भी नहीं था, जिसके लिअे गाजरोंकी सिफारिश की जाती है। तब क्या अुन्हें गाजर कहना अुचित होगा? अैसी हालतमें यह कोअी आश्चर्यकी बात नहीं है कि नींद लानेवाली और मानसिक शिथिलता पैदा करनेवाली दवाअियोंके सहारे जीवनकी गाड़ी किसी तरह खींचनेवाले लोगोंकी संख्या दिनोंदिन बढ़ रही है।

अिस पतनका दूसरा पहलू है पशु-पक्षियोंको कृत्रिम पद्धतियों द्वारा खुराक पैदा करनेवाली मशीनें बना देना। अुदाहरणके लिअे, मुर्गियों, बतखों वगैराको बैटरियों और गहरे बिस्तरोंमें रखा जाता है, कृत्रिम गर्मी और प्रकाश पहुंचाया जाता है और कृत्रिम खुराक खिलाअी जाती है। ये सब गर्भाशयको अुत्तेजित करते हैं और संभोगको गैरजरूरी बना देते हैं। अच्छी किस्मके बतख या मुर्गीके बच्चोंको कुदरती हालतोंमें घासके बिछौनों वगैरा पर तब तक पाला जाता है जब तक अुनका अंडे देनेका समय शुरू नहीं होता। यह समय शुरू होने पर अूपरके कृत्रिम दवाओं और अुत्तेजक साधनोंका प्रयोग किया जाता है। अैसा करनेसे अंडे अितनी तादादमें पैदा किये जाते हैं कि मुर्गियों और बतखोंकी सारी शक्ति अेक ही अंडे देनेके मौसममें खतम हो जाती है। अिसके बाद वे खानेके लिअे बेच दी जाती हैं। और अेक दिनके बच्चोंके साथ फिर वही प्रयोग नये सिरेसे शुरू होता है। पक्षियोंकी अंडे देनेकी शक्ति ज्यों-ज्यों क्षीण होती जाती है, अंडोंके छिलके पतले और ज्यादा पतले होते जाते हैं और अुनके भीतरका पीला भाग अपना पीलापन छोड़ता जाता है, यहां तक कि सफेद भागसे अुसका भेद करना कठिन हो जाता है और अुनमें कोअी स्वाद व गंध नहीं रह जाती। प्रश्न यह खड़ा होता है: अंडा कब अंडा नहीं रह जाता?

ज्यादा दूध पानेके लिअे दुधारू मवेशीको भी बहुत अुत्तेजक खुराक खिलाअी जाती है। यह अैसी नीति है, जिसके फलस्वरूप गायोंके दूध देनेका समय चिन्ताजनक रूपसे घटता जाता है, अुनमें पांव और मुंहका रोग फैलता है और स्तन-प्रदाह और गर्भपातका रोग बढ़ता जाता है।

अुद्योगों और खेतीमें ज्यादा अुत्पादन बढ़ानेकी वृत्तिका यह नतीजा होता है कि अेक तरफ व्यक्तियोंकी संपूर्णता नष्ट होती है — अुनका पूर्ण विकास नहीं होता, परिवारों और समाजोंका संगठन टूटकर वे बिखर जाते हैं, बीमारियां और दवाअी लेनेकी आदत बढ़ती है, और दूसरी तरफ जमीन कमजोर होती है, पशु निर्बल होते हैं और अुनके रोग तथा कीड़े मारनेकी दवाअियां नित नअी बढ़ती हैं।

यह पैसेको पूजनेवाली नीति अुन्हीं कारणोंसे पश्चिमी सभ्यताका नाश कर देगी, जिन कारणोंसे अतीतकी कअी सभ्यताअें नष्ट हो गअीं।*

(अंग्रेजीसे) **विल्फ्रेड वेलॉक**

* लेखकके 'जमीन, स्वास्थ्य और सभ्यता' नामक अंग्रेजी निबन्धसे संक्षिप्त।

स्मरण-यात्रा

[बचपनके कुछ संस्मरण]

काका कालेलकर

कीमत ३-८-० डाकखर्च १-०-०

विवेक और साधना

लेखक: **केदारनाथ**

संपादक

किशोरलाल मशरूवाला; रमणीकलाल मोदी

कीमत ४-०-० डाकखर्च १-२-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

६ फरवरी १९५४

सत्याग्रहकी मर्यादायें

[अब चूंकि पारड़ी खेड़ सत्याग्रह शान्त हो गया है और बन्द कर दिया गया है और कैद किये गये सत्याग्रही सरकार द्वारा छोड़ दिये गये हैं, हमें वर्तमान समयमें सत्याग्रहके उपयोगके बारेमें शान्त मनसे विचार करना चाहिये। पाठक जानते हैं कि अिस विषयमें अिन कालमोंमें मैंने दो-अेक बड़े महत्त्वपूर्ण प्रश्न अुठाये थे। मैं यहां अुन्हें दोहराना नहीं चाहता। लेकिन अिस बात पर अपनी प्रसन्नता प्रकट करनेकी अिजाजत जरूर चाहता हूं कि अुनमें से मुख्य मुद्दोंको प्रजा-समाजवादी पार्टीके श्री कृपलानीजी और श्री जयप्रकाशनारायण जैसे दो प्रसिद्ध नेताओंका समर्थन प्राप्त हुआ है। श्री कृपलानीजी अिस सम्बन्धमें अलाहाबादमें हुअी प्रजा-समाजवादी पार्टीके सम्मेलनमें अपने अध्यक्षीय भाषणमें बोले थे और श्री जयप्रकाशनारायण बम्बअी प्रजा-समाजवादी पार्टीके सम्मेलनके समक्ष भाषण करते हुअे अिस विषयमें बोले थे। नीचे मैं दोनोंके भाषणोंमें से आवश्यक भाग अुद्धृत करता हूं। अिनमें कुछ बातें अैसी हैं, जिन पर और चर्चा करनेकी जरूरत है। लेकिन अभी मैं अुसे चर्चामें नहीं पड़ूंगा।

२८-१-'५४ —म० प्र०]

१

सत्याग्रह — कैसे और कब ?

यह प्रश्न मुझे सत्याग्रहके हथियारके विचार पर ले जाता है, जो गांधीजीने भारत और संसारको दिया। अुन्होंने अपने अनेक भाषणों और लेखोंमें अिस हथियारके अुपयोगकी शर्तें दी हैं। अगर हमें राजनैतिक क्षेत्रमें कारगर ढंगसे अिसका अुपयोग करना हो, तो हमें गांधीजी द्वारा बताअी हुअी शर्तोंको ध्यानमें रखना होगा। सरकारी पदों पर काम कर रहे कांग्रेसी मंत्रियोंके अिस मतको मैं नहीं मानता कि सत्याग्रहका लोकशाहीमें कोअी स्थान नहीं हो सकता। गांधीजीने जिस सत्याग्रहकी कल्पना की थी, वह केवल राजनैतिक हथियार ही नहीं था। आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रोंमें और मित्रों तथा परिवारके लोगोंके खिलाफ भी अुसका अुपयोग किया जा सकता था। गांधीजी अुसे जीवन-सिद्धान्तके रूपमें मानते थे। अिसलिअे यह कहना गलत है कि लोकशाहीमें अुसका कोअी स्थान नहीं है — खास कर आजकी केन्द्रित और नौकरशाही पद्धतिसे चलनेवाली लोकशाहीमें। फिर, सरकारकी सत्ता हमेशा बढ़ती जाती है और सत्ताधारी हमेशा बुद्धिमान या सही नहीं होते। कभी-कभी वे आम जनताके हितके बजाय अेकांगी या पार्टीके हितको ज्यादा महत्त्व देते हैं। सारे प्रश्न अगले चुनावों तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते और न स्थानीय शिकायतोंके आधार पर, जो लोगोंके अमुक भागके लिअे जीवन-मरणका प्रश्न बन सकती हैं, किसी सरकारको हटाया जा सकता है। अैसी हालतमें सत्याग्रहके अधिकारके निषेधका मतलब होगा लम्बे समय तक बिना किसी विरोधके अन्याय और अत्याचार सहते रहना। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि गांधीजीका यह दावा था कि अहिंसक सत्याग्रह वैधानिक है। लेकिन अुन्होंने लोगोंको अिसके अुपयोगके बारेमें सावधान कर दिया था। अुनका कहना था कि सत्याग्रहका अुपयोग अुसी हालतमें किया जाय, जब कोअी दूसरा अुपाय बाकी न रहे और जब प्रतीक्षा करनेका अर्थ सर्वनाश हो।

सत्याग्रहका अेक प्रकार अैसा है, जिसे मेरे विचारसे लगभग टालना ही चाहिये। और वह है आमरण अनशन। जब गांधीजी भी अतिकी पहुंची हुअी स्थितिमें मजबूर होकर अिसे अपनाते थे, तब अुनके साथी अुन्हें आमरण अनशन छोड़नेको राजी करनेमें कोअी कोशिश अुठा न रखते थे। आम जनता भी अुससे बहुत परेशान हो जाती थी। लेकिन हमें यह समझना चाहिये कि आखिर वे अनोखे व्यक्ति थे, जो अमुक अनिवार्य परिस्थितियोंमें खुद अपने लिअे कानून बन जाते थे। हमारे जैसे साधारण लोगोंको तो निश्चित मर्यादाओंके भीतर रहकर ही अपना काम करना चाहिये। मुझे लगता है कि सार्वजनिक शिकायतों या अन्यायको दूर करानेके लिअे आमरण या अनिश्चित समयका अनशन नहीं करना चाहिये। अुसके प्रत्याघात लोगोंकी भावनाओं पर कभी-कभी सर्वनाशकारी सिद्ध हो सकते हैं। केवल अत्यन्त अपवादरूप परिस्थितियोंमें अैसे व्यक्ति ही यह अनशन कर सकते हैं, जिनका नैतिक और आध्यात्मिक स्तर बहुत अूंचा हो और जो लोगोंकी अुत्तेजना और भावनाओंके हिंसक प्रदर्शन पर नियंत्रण रख सकते हों। मेरे अिस कथनका व्यक्तियोंके अुस अुपवास या अनशनसे कोअी सम्बन्ध नहीं, जो नैतिक और धार्मिक शुद्धिके लिअे किया जाता है। वह अुनका व्यक्तिगत मामला है।

दूसरे प्रकारके सत्याग्रहोंके बारेमें हमारी पार्टीने यह ठीक ही निर्णय किया है कि राष्ट्रीय कार्यकारिणीकी अिजाजतके बिना कोअी कदम न अुठाया जाय। यह कहते मुझे अफसोस होता है कि अिस आदेशका पूरी तरह पालन नहीं किया गया। सत्याग्रह शुरू करनेसे पहले जनताके सामने अपने मुद्दे स्पष्ट रूपमें रखनेका हर प्रयत्न किया जाना चाहिये। अिसके अलावा, समझौतेके दूसरे सारे तरीके सत्याग्रह शुरू करनेसे पहले आजमा लिये जाने चाहिये। न केवल स्थानीय कार्यकर्ता ही सम्बन्धित अधिकारियों या सम्बन्धित पार्टियोंके पास अिस सम्बन्धमें पहुंचें, बल्कि अुनके असफल सिद्ध होने पर केन्द्रीय कार्यकारिणीके सम्माननीय और प्रभावशाली सदस्योंकी सेवाओंका भी अिसमें अुपयोग किया जाना चाहिये। अगर अिसके बाद सत्याग्रह अनिवार्य हो जाय, तो लड़ाअी शुरू करनेसे पहले हमें अिस बातका निश्चय कर लेना चाहिये कि जरूरत पड़ने पर हमारी पार्टी अुसे सफल बनानेके लिअे अपनी सारी शक्ति लगा देगी। जनसाधारणसे सम्बन्ध रखनेवाली हर लड़ाअीकी तरह सत्याग्रहमें भी गरीबोंको ही सबसे ज्यादा मुसीबतें अुठानी पड़ती हैं। अगर मुसीबतोंका साहस और धीरजसे सामना करनेकी शक्तिके अभावमें लड़ाअी असफल होती है, तो गरीबोंकी हालत और भी बिगड़ जाती है और बदलेमें अुन्हें कोअी लाभ नहीं होता। अिससे पार्टीकी अिज्जत और प्रतिष्ठाको भी बड़ा धक्का पहुंचता है। मेरी यह राय है कि छोटी-छोटी बातोंके लिअे सत्याग्रहका सहारा लेना पार्टीकी प्रतिष्ठाको नुकसान पहुंचाता है और सत्याग्रह जैसे अुम्दा और अचूक हथियारको भोंथरा बना देता है।

हालांकि आजमगढ़, पारड़ी और विन्ध्यप्रदेशके सत्याग्रहमें मैंने अूपर जो शर्तें बताअी हैं, अुनका ठीक-ठीक पालन नहीं किया गया, फिर भी मैं वहांके सत्याग्रहियोंको अुन्होंने जिस सिद्धान्तको सामने रखकर सत्याग्रह किया और जो त्याग और कष्ट सहा, अुसके लिअे बधाअी देता हूं। अुनका ध्येय सर्वथा अुचित था और सत्याग्रहमें अहिंसाका पालन किया गया था।

जे० बी० कृपलानी

२

साम्यवाद, समाजवाद और सत्याग्रह

आज समाजवाद और साम्यवाद दोनोंको असफलताका सामना करना पड़ रहा है। साम्यवादको जहां-जहां विजय मिली है, वहां राष्ट्रीय पूंजीवाद और तानाशाहीमें अुसका अन्त हो गया है — जो साम्यवादके बिलकुल विरुद्ध है। समाजवादने कमसे कम पश्चिमी

www.vinoba.in

युरोपमें अपने मूल आदर्शवादको खो दिया है और केवल पार्लिया-मेन्टरी या कानूनी सिद्धान्तका रूप ले लिया है। अिस तरह हिंसा और पार्लियामेन्टरी कार्य दोनोंकी पद्धतियां असफल सिद्ध हुअी हैं। मेरे विचारसे गांधीवाद तीसरा रास्ता बताता है — अहिंसक जनआन्दोलन द्वारा क्रांतिका रास्ता।

गांधीवाद न तो सत्ता हथियानेको अपना अेकमात्र लक्ष्य मानता ह और न राज्यसत्ता पर निर्भर करता है। बल्कि वह सीधा लोगोंके पास पहुंचता है और अुन्हें अपने जीवनमें क्रांति करनेमें मदद पहुंचाता है, जिसके फलस्वरूप सारे समाजके जीवनमें क्रांति होती है। अेक बार जनताकी शक्ति पैदा हो जाने पर राज्यसत्ताका समर्थन और सहायता निश्चित हो जाती है।

अिससे यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि अिस तरह गांधीजीकी पद्धति जरूरी तौर पर पार्टी और वर्गकी सीमाओंसे परे जाती है, क्योंकि अुसका ध्येय सारी पार्टियों और वर्गोंके लोगोंका हृदय-परिवर्तन करना या अुनमें क्रांति पैदा करना होता है। समाजवाद अेक वर्गको दूसरे वर्गके खिलाफ भड़काकर आगे बढ़ना चाहता है, जब कि गांधीवाद वर्गोंकी मर्यादाओंको भेदकर आगे बढ़ना चाहता है। समाजवाद अेक वर्गको दूसरे पर विजयी बनाकर वर्गोंका नाश करना चाहता है — जो कुछ हद तक तर्क विरुद्ध मालूम होता है। गांधीवाद वर्गोंको अिस तरह साथ लाकर अुनका अन्त करना चाहता है कि वर्गभेद रह ही न जायं।

समाजवादका अन्तिम ध्येय वर्गविहीन समाजकी स्थापना करना है, लेकिन वह सामाजिक क्रांतिको ही राज्यके कार्य पर निर्भर बनाकर राज्यको सर्वशक्तिमान बनाना चाहता है। गांधीवाद भी समाजवादकी तरह राज्यविहीन समाजकी स्थापना करनेका ध्येय अपने सामने रखता है। लेकिन अिसलिअे वह सामाजिक प्रक्रियाको राज्य पर कमसे कम निर्भर बनाकर आगे बढ़ता है, जो अधिक युक्तिसंगत है। गांधीवादी पद्धतिमें राज्यविहीन समाजकी स्थापनाकी प्रक्रिया प्रयत्नके साथ ही शुरू हो जाती है, भविष्यके किसी दूरके काल्पनिक समयसे अुसका सम्बन्ध नहीं होता। अिसलिअे वह ज्यादा सच्ची क्रांतिकारी प्रक्रिया है, जिसका अन्य प्रक्रियाओंके बनिस्बत ध्येय तक पहुंचना ज्यादा संभव है।

अिन कारणोंसे यहां मैं यह सिफारिश करना चाहूंगा कि गांधीवाद और गांधीवादी पद्धतिका ज्यादा गहरा अध्ययन किया जाय और अुसे ज्यादा गहराअीसे समझनेका प्रयत्न किया जाय। अुदाहरणके लिअे, सत्याग्रह आज समाजवादी क्षेत्रोंमें अेक फैशन-सा हो गया है। लेकिन अगर सत्याग्रहको हमें अेक स्वतंत्र, समान और भले समाजकी तरफ ले जाना है और दलबन्दीके आधार पर की जानेवाली लड़ाअीका हलका रूप नहीं लेने देना है, तो हमें अुसे ज्यादा अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। हमें यह महसूस करना चाहिये कि **हरअेक शांतिपूर्ण आन्दोलन सत्याग्रह नहीं है।** (मोटे टाअिप हमने किये हैं।) सत्याग्रहका आधार हृदय-परिवर्तनकी संभावनामें रही श्रद्धा पर होता है। कोअी खास सत्याग्रही अपने विरोधीका हृदय-परिवर्तन करनेमें असफल रह सकता है, लेकिन वह श्रद्धाकी असफलता नहीं है। वह केवल अुसकी व्यक्तिगत असफलता कही जायगी। अिस तरह **सत्याग्रह किसी पार्टी या वर्गकी लड़ाअी नहीं हो सकता।** (मोटे टाअिप हमने किये हैं।) वह सारी पार्टियों और सारे वर्गोंको अपील करता है। सत्याग्रहीके लिअे आदर्श तक पहुंचना भले संभव न हो। लेकिन महत्त्वकी चीज तो यह है कि वह अपने आदर्शको समझ ले और अीमानदारीसे अुस तक पहुंचनेका प्रयत्न करे।

(अंग्रेजीसे) **जयप्रकाशनारायण**

आधुनिक समाजमें स्त्रियोंका कार्य

[ता० ३०-१२-'५३ को सिंहवाड़ा पड़ाव, जिला दरभंगामें किये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

अभी तक बहुत सारे सामाजिक काम पुरुषोंने किये हैं, लेकिन अब जरूरी हो गया है कि सामाजिक मैदानमें बहनें आयें। क्योंकि जो रचना और अिंतजाम पुरुषोंने किया है, अुसका नतीजा यह है कि अेकके बाद अेक महायुद्ध खड़े हो रहे हैं। तीस सालके अन्दर दो महायुद्ध हो चुके और तीसरे महायुद्धकी तैयारी कब होगी नहीं कह सकते। अैसी हालत आज पुरुषोंने बना दी है। अगर स्त्रियां सामाजिक क्षेत्रमें आती हैं, जनताका शिक्षण अपने हाथमें लेती हैं, तो समाजमें अहिंसा दाखिल होगी और दुनियाको महा-युद्धसे रोकनेमें मदद मिलेगी। यह बड़ी भारी जिम्मेदारी बहनों पर आ पड़ी है। लेकिन यहां बिहारमें हालत यह ह कि नये युगका सन्देश लेकर नेतृत्व तो करेंगी तब करेंगी, आज वे घरके बाहर भी नहीं निकल सकतीं!

स्त्रीको पुरुषके समान समाज-कार्यका मौका मिलना चाहिये। और यहां तक कि यज्ञकार्यमें गृहस्थके साथ पत्नी न हो तो यज्ञकार्य पूर्ण नहीं होता। अिसलिअे अुसे सहधर्मचारिणी कहा है और अिसलिअे सामाजिक काममें पुरुषका जितना हक है अुतना स्त्रीका होना ही चाहिये। यह मामूली समाजकी बात हमने की। लेकिन आगेके समाजमें बहनों पर विशेष जिम्मेदारी आनेवाली है। आगेका समाज अहिंसा पर चलनेवाला है। हिंसा टिकनेवाली नहीं है। हिंसा रही तो मानवका खात्मा होनेवाला है। अब भीम और जरासन्धकी बात गयी। अब अेटम बमकी बात आयी है। आजकी लड़ाअियोंमें करोड़ों लोग शामिल होते हैं और अैसे-अैसे शस्त्र बनाये गये हैं, जिनके प्रयोगसे मनुष्य-जाति क्षण भरमें नष्ट हो सकती है।

विज्ञानने नया मसला खड़ा किया है। या तो आप मानव-जातिके बचावका तरीका निकालिये या मानव-जातिका खात्मा देखिये। अहिंसा पर जहां समाजरचना करनी है, वहां स्त्रियोंकी जिम्मेदारी बढ़ती है। और अुनके हाथमें अहिंसक समाजकी बागडोर आनेवाली है। जैसे कुटुम्बमें बच्चे मांके हाथमें होते हैं, वैसे ही नये समाजकी बागडोर स्त्रियोंके हाथमें होगी, अैसा हमारा विश्वास है और अुसके लिअे अुन्हें तैयार रहना है। हम चाहते हैं कि स्त्री-पुरुषकी विषमता मिटा दें।

सर्वोदय विचार जिसे हम कहते हैं, अुसमें स्त्री-पुरुषका भेद नहीं रहेगा। सब जातियोंका दरजा बराबरका रहेगा। कोअी अूंचा नहीं, कोअी नीचा नहीं। अिसके अलावा, हमें मालिक और मजदूरका भेद भी मिटाना है। यह सुनते ही मालिक बेचारे घबड़ा जाते हैं; कहते हैं जैसे मजदूरके लड़के खेत पर मेहनत करते हैं, वैसे ही हमारे लड़कोंको भी करनी पड़ेगी क्या? हम कहते हैं, जी हां, और अच्छी तरह मेहनत करनी पड़ेगी, ताकि भूख अच्छी लगे और खाया हुआ अच्छी तरह हजम हो। आज मालिकोंकी हालत यह है कि अुन्हें हजम ही नहीं होता। हम अुन्हें अुससे मुक्ति दिलाना चाहते हैं। जो कहता है कि हम मालिक हैं अुसे भगवान्‌ने कहा है — तू असुर है। हमारे यहां चाहे छोटे हों या बड़े हों हर कोअी मालिक हैं। जो मालिकीका दावा करते हैं वे भगवान्‌के विरोधी होते हैं। क्योंकि वे भगवान्‌की जगह लेना चाहते हैं। अिसलिअे मालिकोंको भगवान्‌का शाप ह कि तुम भूमाताकी सेवा नहीं करोगे, केवल खाया करोगे तो वह हजम नहीं होगा। हम चाहते हैं कि मालिकीका बोझा लोग छोड़ दें और सेवक बनें। और हम सब भाअी भाअी हैं यह समझें तो समाज सुखी होगा। आप जानते हैं कि जमीन समतल रही तो फसल अुगती है। टीले

www.vinoba.in

और गढ़े रहनेसे फसल नहीं होती । अिधर जो बड़े-बड़े जमींदार हैं और श्रीमान हैं वे टीले हैं और दूसरी तरफ खानेके लिअे दाना नहीं अैसे गरीब यानी गढ़े हैं। अिसलिअे फसल नहीं अुग सकती। अैसी हालत आज हमारे समाजकी है।

हम समझते हैं मनुष्यके लिअे सबसे श्रेष्ठ कोअी बैंक है तो वह समाज रूपी बैंक है। अुसमें पैसा रखेंगे तो वह अत्यन्त सुरक्षित रहेगा और अत्यन्त अुपयोगी होगा। जवानीमें शक्ति और बुद्धि हो तो अुसका अुपयोग क्या? अुससे तो आसपासके लोगोंकी सेवा करनी चाहिये, समाज-सेवा करनी चाहिये। गीतामें भगवान्‌ने कहा है, जो भक्त होते हैं, अुनके संसारकी चिन्ता हम करते हैं। शंकराचार्य पूछते हैं कि क्या दूसरेका भार भगवान् नहीं अुठाता? भगवान् सबका भार अुठानेवाला है, लेकिन जिसने अपना भार अुठाया अुसकी चिन्ता भगवान् क्यों करेगा? अिसलिअे जिन्होंने अपनी चिन्ता छोड़ दी है अुनकी चिन्ता भगवान् करता है। तो हम अपनी सारी बुद्धि, सारी ताकत, सारी सम्पत्ति समाजको अर्पण कर दें, तो भगवान् हमारी चिन्ता करेगा। हम हमारी चिन्ता कितनी कर सकेंगे? केवल अेक ही दिमागसे तो कर सकेंगे। पर अगर हम अपनी चिन्ता छोड़ दें तो सारी जनता हमारी चिन्ता करेगी। अिसलिअे अपनी चिन्ता गरीबोंकी सेवामें लगाओ, यह हम श्रीमानोंको समझाना चाहते हैं।

हमने अेक तो यह कहा कि स्त्री-पुरुषकी विषमता मिटानी है। जातियोंके बीच जो विषमता है वह मिटानी है। दूसरी बात आर्थिक समानता लानी है। और तीसरी बात मालिक-मजदूरकी विषमता मिटानी है। यह मत समझिये कि हम कोअी भेद पसन्द नहीं करते। सृष्टिमें भेद हैं। पांच अंगुलियां असमान हैं। लेकिन वे सहयोग करती हैं तो लाखों काम कर लेती हैं। लेकिन सहयोग क्यों हो सकता है? मानिये अेक अंगुली दो अिंच हो और अेक अंगुली दो फीट हो, तो क्या वे अेक लोटा भी अुठा सकती है? तब तो सहयोग ही नहीं हो सकेगा। हमें समाजमें जो समता लानी है, वह अिन पांच अंगुलियोंकी समता लानी है और अंगुलियोंमें जैसा सहयोग होता है वैसा समाजमें आपसमें सहयोग होना चाहिये। और अंगुलियोंकी अपनी-अपनी खूबी है, अुसी तरह हरअेक मनुष्यकी अपनी अपनी खूबी है। तो हरअेक मनुष्यको अपना पूरा विकास करना है और अैसा समय लाना है जिसमें सबका सहयोग हो सके। हम ये तीनों प्रकारकी विषमता और भेद मिटाना चाहते हैं। पर चौथा भेद और निर्माण हुआ है। वह भयंकर है और नया है। वह कौनसा भेद है? वह है पार्टी-भेद। फलाना कांग्रेसी, फलाना प्रजा-समाजवादी, फलाना जनसंघी, अिस तरह पार्टी पार्टीमें बंटना चाहते हैं। चार वर्णके साथ अब और अेक नया वर्ण निकला। अेक पहनता है लाल टोपी, अुसका अेक अपना वर्ण हो गया। अेक पहनता है सफेद टोपी, अुसका अेक अपना वर्ण हो गया। अेक पहनता है काली टोपी, अुसका अेक अपना वर्ण हो गया। हम समझते हैं कि अेक भगवा टोपी भी है। तो चार टोपियां तैयार हो गयीं। पुराने भेद तोड़ते-तोड़ते नाकोंदम हो गया। अुसमें यह अेक और नया भेदासुर निर्माण हुआ है। अिसलिअे अिसने जातिभेदको और बढ़ाया। जिस जातिभेदको खतम करनेके लिअे राजा राममोहन रायसे लेकर महात्मा गांधीने प्रयत्न किये अुसे ही हम आज बढ़ा रहे हैं। और नतीजा यह है कि अेक पार्टीके लोग दूसरी पार्टीके सज्जनकी अच्छाअीको नहीं लेते। और दूसरी बड़ी बात सामनेकी पार्टीमें कोअी सज्जन हो, तो लोग अुसका द्वेष करते हैं। अुसका खतरा महसूस करते हैं। कहते हैं अुसके कारण अुस पार्टीका वजन बढ़ेगा। अेक पार्टीमें भी द्वेष और भेद है। कांग्रेसमें भी अेक दूसरेका द्वेष लोग करते हैं। प्रजा-समाजवादियोंमें भी अेक-दूसरेका द्वेष करनेवाले पैदा होते हैं। द्वेषसे द्वेष पैदा होता है। हम चाहते हैं दुनियामें अैसे कुछ लोग हों जो कहें कि अिन्सानियत यही हमारा अेकमात्र धर्म है। हम लेवल नहीं चिपकाना चाहते, अैसा जब लोग करेंगे तब यह पार्टीका प्रलोभन टूटेगा। जब तक पार्टीका लोभ है, तब तक सज्जनको लोग बुरा मानेंगे। अिसीलिअे हम चाहते हैं कि अैसा कहनेवाले कुछ लोग निकलें कि हम मानव हैं, अिन्सान हैं। अैसा जब होगा तब सच्चा मानवधर्म होगा। मनुष्य सब कुछ करता है, लेकिन मानवता भूल जाता है। आज मानवताकी कीमत गिर गयी है। अिसलिअे हम कहते हैं कि ये सारे जाति-पांति वगैराके भेद तोड़ो। और हम परमेश्वरके भक्त हैं, अिन्सान हैं, यह हर कोअी महसूस करे। हमें परमेश्वरने पैदा किया। हम अिन्सानियतके नाते जो धर्म समझेंगे वही करेंगे। हम केवल मानवधर्म समझते हैं।

विनोबा

स्वदेशी और बेकारी

[प्रजा-समाजवादी पार्टीकी राष्ट्रीय कार्यकारिणीने पटनामें हुअी अपनी जनवरीकी बैठकमें नीचेका महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास किया।]

प्रजा-समाजवादी पार्टीकी राष्ट्रीय कार्यकारिणीकी राय है कि बेकारीकी समस्याका सामना करनेके लिअे स्वदेशीकी भावनाको फिरसे जगाना चाहिये। और स्वदेशीकी यह भावना ठेठ गांवों तक पहुंच जानी चाहिये । अेक अेक गांव या ज्यादा अच्छा तो यह होगा कि गांवोंके समूहोंको स्वावलम्बन बढ़ानेके लिअे राजी किया जाय, ताकि गांवकी दस्तकारियां और धन्धे फिरसे जी अुठें और ग्रामवासियोंकी बेकारी काफी हद तक कम हो। पंचायतों, जनपदों, जिला बोर्डों और म्युनिसिपलिटियों जैसी स्थानीय संस्थाओंको स्थानीय सार्वजनिक निर्माणकार्यका विकास करना चाहिये और अुच्च अधिकारियोंसे काम और विकासके लिअे की जानेवाली सहायताकी मांग सार्वजनिक निर्माणकार्यके ठोस प्रस्तावोंके आधार पर खड़ी होनी चाहिये — जिनमें गरीब और मध्यमवर्गके लोगोंके लिअे काफी तादादमें मकान बनानेका प्रस्ताव भी शामिल हो। सरकारकी काम दिलानेवाली संस्था 'अेम्प्लायमेन्ट अेक्सचेंज' में सुधार करके अुसे ज्यादा मजबूत बनानेकी जरूरत है, ताकि वह बेकारोंके विश्वसनीय आंकड़े बतानेवाली संस्था और लोगोंको काम दिलानेवाले मुख्य साधनके रूपमें काम कर सके।

बुनियादी तौर पर यह समस्या तभी हल की जा सकती है, जब सरकार अपनी सम्पूर्ण अर्थव्यवस्थाका पुनर्गठन करनेकी हिम्मत दिखाये। अिसके लिअे जो बुनियादी सुधार करनेकी जरूरत है, अुनमें से कुछ महत्त्वके सुधार ये हैं: जमीनका फिरसे बंटवारा, गांवोंमें सहकारी मंडलोंकी स्थापना, खेतीको सरकारी मदद, बंजर या पड़ती जमीनोंको खेती करने लायक बनाना, हाथ-करघा अुद्योग सहित छोटे पमानेके अुद्योगों और गृह-अुद्योगोंके लिअे सुरक्षित बाजार और आर्थिक समानता तथा खर्चमें काटकसरकी सामान्य नीति, ताकि ज्यादा तादादमें लोगोंको काम दिया जा सके। घरेलू पूंजीकी लागतको बढ़ानेके लिअे राज्यको बैंकों, बीमा कंपनियों, खानों और विदेशी व्यापारको अपने अधिकारमें लेना होगा और खुद अुन्हें चलाना होगा।

(अंग्रेजीसे)

अुस पारके पड़ोसी

[पूर्व अफ्रीकाके प्रवासका रोचक वर्णन]

काका कालेलकर

कीमत ३-८-० डाकखर्च ०-१५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

आधुनिक समाजमें युद्ध और संघर्ष

[नअी दिल्लीमें ता० २८-१२-'५३ के दिन, आंतरराष्ट्रीय कानून परिषद्का अुद्घाटन करते हुअे, राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसाद द्वारा दिये गये भाषणमें से निम्नलिखित अुद्धृत किया जा रहा है।]

सभ्य होनेका दावा करनेवाले प्रत्येक समाजमें काननका ही शासन चलना चाहिये, अिस बातको सामान्यतः सब लोग मानते हैं और अुनकी यह मान्यता मैं मानता हूं कि ठीक है। लेकिन तब यह ज्यादा जरूरी हो जाता है कि कानून अैसा हो जिसका पालन लोग स्वभावतः अुसमें निहित अुसके नैतिक मूल्यके कारण करें; अुसके पीछे राज्यका बल है, अिस कारण नहीं। जनताकी आवाज कोअी भगवानकी आवाज नहीं है। अिसलिअे जिस चीजकी अुत्पत्ति जनताकी आवाजसे हुअी है, वह अवश्य अच्छी ही होगी, अैसा नहीं कह सकते। अिसलिअे हमें अैसी कोअी योजना करनी चाहिये कि जो व्यक्ति कानूनकी रचना करते हैं, अुनमें अिस कार्यकी पूरी योग्यता हो, ताकि कानून सही और न्यायसम्मत बने।

किसी राज्य-विशेष और अुसके कानूनके लिअे जो बात सही है, वह विविध राष्ट्रोंसे सम्बन्ध रखनेवाले कानूनके लिअे तो और भी ज्यादा सही है, क्योंकि अिस कानूनके पीछे तो अुसके आन्तरिक मूल्यके सिवा और कोअी बल नहीं होता। लेकिन आन्तरराष्ट्रीय कानूनमें किसी राज्य-विशेषके कानूनकी अपेक्षा अेक महत्त्वकी विशेषता है; यह कानून कानून-शास्त्रके विशेषज्ञों द्वारा रचा गया है और राज्योंने अुसे स्वेच्छापूर्वक स्वीकार किया है। यह अुस प्रकारका कानून नहीं है जिसका निर्माण विधान-सभायें करती हैं और जिसका अमल राज्यके बलके आधार पर होता है। विभिन्न राष्ट्र अुसे अुसके गुणोंके कारण स्वीकार करते हैं और अिस तरह अुसके पीछे पर्याप्त नैतिक बल होता है। अिन्टरनेशनल लॉ अेसोसियेशन (आन्तरराष्ट्रीय कानून परिषद्) नामकी संस्थाकी कुछ व्याख्याओं और प्रस्तावोंको तो यूनो (संयुक्त राष्ट्र संघ) ने भी माना है और मैं आशा करता हूं कि धीरे-धीरे, जिनकी नजरके सामने कोअी वैयक्तिक या राष्ट्रीय स्वार्थ नहीं होता किन्तु जो कानूनी सिद्धान्तोंकी रचना अुनकी सारवत्ताको ही ध्यानमें रखकर करते हैं, अैसे लोगों द्वारा पेश किये गये सिद्धान्तोंका महत्त्व अधिकाधिक बढ़ता जायगा।

मानव-समाजकी आजकी हालतमें, जबकि राष्ट्रोंके आपसी हितविरोधके कारण राज्य युद्धकी दिशामें प्रेरित होते हैं, यह बात और भी जरूरी है। युद्धका स्वरूप आजकी दुनियामें अधिकाधिक विजित शत्रुके सम्पूर्ण विनाश और अुसी तरह विजेताके लगभग सम्पूर्ण विनाशका होता जा रहा है। अिसलिअे अैसे कदम अुठाना जरूरी है जो युद्ध पैदा करनेवाले संघर्षको रोकें।

अंतिम विश्लेषणमें ये संघर्ष भौतिक कारणों और विचारधारा-सम्बन्धी मतभेदोंमें से पैदा होते हैं। अुनका सम्पूर्ण निवारण शायद शक्य न हो, तो भी अुन्हें टालनेके लिअे हमें कुछ बुनियादी बातों पर ध्यान देना चाहिये।

आजकल भौतिक समृद्धिको बहुत महत्त्व दिया जाता है। जिसे 'जीवन-मान' कहा जाता है अुसकी कोअी सीमा नहीं मानी गयी है। होता यह है कि जीवन-मान जिन भौतिक आवश्यकताओं पर निर्भर करता है अुन्हें बहुत ज्यादा महत्त्व देनेके कारण अमीर और गरीब देशों और वर्गोंमें संघर्ष तीव्रतर होता जा रहा है। मनुष्य जब तक, अुसके पास जो कुछ है, अुसीमें सन्तोष माननेके बजाय अपनी अिच्छाओंकी तृप्तिमें ही सुख ढूंढ़ता रहेगा, तब तक यह संघर्ष चलता ही रहेगा।

अिसका अर्थ यह हुआ कि आधुनिक विचारकी नहीं, तो आधुनिक समाजकी रचना हमें नये सिरेसे करनी पड़ेगी। मनुष्यकी भौतिक आवश्यकताओंकी अुपेक्षा नहीं करनी है। लेकिन आन्तरिक संतोषसे मिलनेवाले सुखको ज्यादा महत्त्व दिया जाना चाहिये। यह सुख भौतिक आवश्यकताओंकी तृप्ति पर निर्भर नहीं करता; यह अेक सर्वथा स्वतंत्र वस्तु है। मनुष्यकी भौतिक आवश्यकतायें अितनी स्पष्ट और अुनकी मांग अितनी जोरदार होती है कि अुनके विषयमें किसी तरहका मानसिक आग्रह रखनेकी जरूरत नहीं होती, जबकि आन्तरिक सन्तोष बड़ी हद तक मानसिक अनुशासनका फल है और अुसे अपनी संकल्प-शक्ति द्वारा बलवान बनानेकी जरूरत होती है, ताकि मनुष्यकी भौतिक आवश्यकताओंके मुकाबलेमें वह टिका रहे।

जाहिर है कि यदि मनुष्यकी शारीरिक आवश्यकताओंकी कोअी सीमा न बांधी जाय, तो यह संघर्ष कभी मिटाया नहीं जा सकता। अिसका अेक मोटा पर असरकारक अुदाहरण लीजिये।

अेक समय था जब कि मनुष्य अुसके पांव अुसे जितनी गति दे सकते थे, अुसीसे सन्तुष्ट था। कालान्तरमें अुसे महसूस हुआ कि अुसकी गति बढ़ना चाहिये और आज वह अिस हालतमें है कि — अगर अिस सम्बन्धमें जो समाचार सुननेमें आते हैं, वे सही हों तो — वह आवाजकी दूनी गतिसे यानी १६०० मील प्रति घंटाकी रफ्तारसे यात्रा कर सकता है। मैं नहीं जानता कि यह वेग अभी और बढ़ेगा, या अुसकी हद हो चुकी है। गतिका वेग बढ़ानेके लिअे मनुष्यका यह पागलपन बताता है कि वह अपनी शारीरिक क्षमताकी सीमाओंका अुल्लंघन करनेके लिअे किस कदर लालायित है। अुससे सूचित होता है कि दूसरी बातोंमें भी वह अपनी आवश्यकताओंकी कोअी सीमा बांधनेके लिअे तैयार नहीं है। अब सवाल यह है कि अपनी आवश्यकताओंकी पूर्तिके विषयमें मनुष्यकी शक्तिके अिस अकल्पित और जबरदस्त विस्तारसे क्या मानव-समाजके सुखमें कोअी वृद्धि हुअी है? अिस प्रश्नके अुत्तरमें यदि कोअी कहे कि अिस युगमें भौतिक विज्ञानने मनुष्यको जो भारी शक्ति प्रदान की है, अुसके बावजूद वह आज भयसे पहलेकी अपेक्षा ज्यादा पीड़ित है, तो हमें अुसकी बात स्वीकार करनी पड़ेगी। दुनियाके सबसे बलवान राष्ट्र भी आज अपने प्रतियोगियोंका भय मानते हैं और अिस डर पर विजय पानेके लिअे वे अैसे सब साधनोंके निर्माण और संग्रहकी बेहद कोशिश कर रहे हैं जिनके जरिये अुन प्रतियोगियोंको दबाया जा सकता है। यह कोशिश अपनी रक्षाके लिअे नहीं हो रही है, वह शत्रुके विनाशके लिअे हो रही है।

भौतिक आवश्यकताओंकी पूर्तिकी कभी पूरी न होनेवाली लालसा, और अुसी तरह यह भयकी अनुभूति मनुष्यकी स्वतंत्रताओंमें कअी तरहकी बाधा डालनेके लिअे अेक और दृष्टिसे भी जवाबदार है। आप लोग वकील हैं अिसलिअे आपको यह पता अवश्य होगा कि आजकल राज्य अपने कानूनके जरिये नागरिकोंके जीवनको बांध रखनेके लिअे किस तरह हाथ-पांव फैला रहा है।

दुनियामें आज अेक अैसी विचारधारा भी चल रही है, जो मानती है कि राष्ट्रका श्रेष्ठ हित और अुसके घटक व्यक्तियोंका सर्वोच्च हित किस बातमें है, अिसको राज्य ही सबसे ज्यादा अच्छी तरह जानता है। अिस मान्यताके आधार पर वह व्यक्तिकी सारी प्रवृत्तियोंका, अुसके सारे जीवनका नियंत्रण करना चाहता है। दूसरे शब्दोंमें अिस विचारके अनुसार व्यक्तिके व्यक्तित्वके नाशमें ही अुसका श्रेष्ठ हित है और अुसीमें राष्ट्रका हित है, क्योंकि राष्ट्र व्यक्तियोंका समुदाय-मात्र है।

जिन देशोंमें यह विचारधारा नहीं मानी जाती, और जहां मनुष्यके व्यक्तित्वका बहुत मूल्य किया जाता है, वहां भी अिस बातसे अिनकार नहीं किया जा सकता कि मनुष्यका बनाया हुआ कानून मनुष्यके जीवनके अधिकाधिक विस्तृत क्षेत्र पर प्रभुत्व

www.vinoba.in

जमानेकी कोशिश कर रहा है। यह स्थिति अिसलिअे पैदा हो रही है कि सब मिलाकर अुन देशोंमें भी आन्तरिक सन्तोषके बनिस्बत भौतिक आवश्यकताओंकी तृप्ति पर ही ज्यादा जोर दिया जाता है। मनुष्यके व्यक्तित्वका आदर करना चाहिये और अुसे विकासका पूरा अवसर देना चाहिये, यह सब वे मानते हैं, तब भी अैसा हो रहा है। व्यक्तिकी प्रवृत्तियोंका नियंत्रण अुन्हें भी अनिवार्य मालूम होता है, अिसका कारण यह है कि वे भी तत्त्वतः भौतिक आवश्यकताओंकी पूर्तिकी प्रेरणासे परिचालित हैं। विधान-सभामें — जिसे कानून निर्माण करनेका अधिकार होता है — व्यक्तियों और वर्गोंके हितोंका प्रतिनिधित्व अुनके चुने हुअे प्रतिनिधियों द्वारा ही होना चाहिये, अिस बातके आग्रहकी जड़में भी यही चीज है। जब सैद्धान्तिक दृष्टिसे अिन आवश्यकताओंकी कोअी सीमा होती ही नहीं, तब जो कानून बनाया जाय अुसमें अिन आवश्यकताओंकी पूर्तिकी क्षमताके सिवा और किसी मूल्यका होना सिद्धान्तकी बात नहीं रहती। फिर अुसमें महज अुपयोगिताकी, किसी तरह अपना काम निकालनेकी दृष्टि मुख्य बन जाती है। कर्तव्यके बजाय आजकल अधिकारों पर जोर देनेकी प्रवृत्तिका स्पष्टीकरण भी अिसमें मिल जाता है। अधिकार हमेशा दूसरोंसे कुछ लेना या अुनके खिलाफ कुछ करना सूचित करता है। अिससे अुलटे कर्तव्यमें यह अभिप्राय है कि हमें किसीको कुछ देना है। यह सारी दृष्टि बदले बिना हम किसी बुनियादी परिवर्तनकी आशा नहीं कर सकते और अुक्त परिवर्तनकी दिशामें हमारा पहला कदम, जैसा कि मैंने अूपर बताया है, यह होना चाहिये कि भौतिक आवश्यकताओंकी पूर्तिसे मिलनेवाले सुखकी अपेक्षा आन्तरिक संतोषका महत्त्व अधिक माना जाय।

(अंग्रेजीसे) **डॉ० राजेन्द्रप्रसाद**

टिप्पणियां

मानवेन्द्रनाथ राय

अभी कुछ दिन पहले देहरादूनमें, जहां कि सार्वजनिक जीवनसे निवृत्त होनेके बाद वे कुछ वर्षोंसे रह रहे थे, श्री अेम० अेन० रायका देहान्त हो गया। श्री अेम० अेन० राय भारतकी आजादीके लिअे आजीवन लड़नेवाले योद्धा थे। अगरचे जिस विचार और पद्धतिका अनुसरण करके भारतने अपनी आजादी हासिल की, अुससे अुनकी पद्धति अलग प्रकारकी थी, लेकिन आजादीके प्रति अुनका प्रेम और अुनकी प्रामाणिकतामें कोअी सन्देह नहीं हो सकता था। और अपने अिन गुणोंके कारण ही वे विदेशोंमें रहते हुअे अनेक प्रकारके कष्ट और कठिनाअियां वीरतापूर्वक सह सके। अपने जीवनका अधिकांश क्रियाशील हिस्सा अुन्होंने पश्चिममें, और वह भी रूसी और बोलशेविक सिद्धान्तोंके वायुमंडलमें बिताया था। शायद यही वजह थी कि वे गांधीवादी विचार-धाराको समझने और अुसका सही मूल्यांकन करनेमें समर्थ नहीं हुअे। वे अुच्च कोटिके विचारक और विद्वान व्यक्ति थे। अिन विचारोंका प्रचार अुन्होंने अपनी अनेक पुस्तकोंके जरिये किया। और अिस तरह अुन्हें जो प्रशंसक प्राप्त हुअे, अुनके आधार पर अुन्होंने अेक राजनीतिक पार्टीका भी निर्माण किया था, जिसे स्वराज्यकी प्राप्तिके बाद खुद तोड़ दिया। अपने जीवनमें अुन्हें कोअी बड़ी और दर्शनीय सफलतायें चाहे न मिली हों, लेकिन अेक राजनीतिक विचारकके रूपमें — जो सिर्फ दिमागी अूहापोह नहीं करता था, बल्कि जो सदा लड़नेवालोंकी पहली पंक्तिमें सिपाहीकी तरह हिस्सा लेता था — वे चिरकाल तक याद किये जायंगे। भगवान् अुन्हें शान्ति दे!

२–२–'५४ **म० प्र०**

(अंग्रेजीसे)

अ० भा० यात्री-सेवा-संघ

रेल्वे स्टेशनों पर लाखों यात्री प्रतिदिन आते हैं, पर अुनकी सुख-सुविधा देखनेवाली कोअी सक्रिय अखिल भारतीय संस्था अभी तक नहीं थी। अब अुसकी स्थापना हो गअी है। पर वह तभी सफल हो सकती है, जब यात्री तथा कार्यकर्ता दोनों सहयोग देकर अुसे सफल बनानेमें सहायक हों। देश अितना बड़ा है कि सभी स्थानों पर किसी व्यक्ति या समूहका भी पहुंचना कठिन है। अिसलिअे जो स्थानीय यात्रीसेवामें रुचि रखनेवाले भाअी-बहन हैं, अुनसे हम आग्रहपूर्वक निवेदन करते हैं कि वे सब अपनी अिस संस्थासे संबंध रखकर परस्पर सहयोगसे सेवाकार्यमें सहायक हों।

मुझे गुजरातमें यात्री-सेवा-संघका कार्य समझनेका अवसर मिला। अिस संघने अपने संगठन द्वारा यात्रियोंकी सेवा करनेकी जो पद्धति अपनायी है, वह सराहनीय है। अिससे हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।

रेल्वे स्टेशनोंकी संख्या हजारोंकी है और अुन पर प्रतिदिन लाखों यात्री आते हैं। अगर सरकार और जनताके प्रतिनिधियोंके सहयोगसे अैसे महत्त्वपूर्ण सार्वजनिक स्थानोंका अुपयोग हम लोग शिक्षाके लिअे कर सकें, तो वह अेक महत्त्वपूर्ण कार्य होगा।

अिन स्टेशनोंको हम वनमहोत्सवके लिअे आवश्यक नर्सरी, आदर्श सफाअी, तथा पानीकी व्यवस्था तथा राष्ट्रके हितमें आवश्यक प्रचारके केन्द्र बना सकते हैं।

अन्तमें हम यह आशा करते हैं कि प्रत्येक भारतनिवासी (करीब) यात्री है और अुसके द्वारा चुने हुअे प्रतिनिधि यात्रियोंके प्रतिनिधि हैं।

अिसलिअे हमारी सभी यात्रीसेवा-संस्थाअें अुन सबके सहयोगसे और दूसरे अुत्साही सेवावृत्तिवाले तथा प्रभावशाली भाअी-बहनोंकी सलाह-सहायतासे यात्रियोंके साथ संपर्क साधकर और यात्रियोंकी बातें जानकर अुनका ठीक अुपयोग करनेकी व्यवस्था करें।

हमें पूरा भरोसा है कि सबके सहयोगसे यह जरूरी सेवाकार्य सफल होगा।

८–१–'५४ **राघवदास**

महादेवभाअीकी डायरी

संपा० नरहरि परीख

अनु० रामनारायण चौधरी

पहला भाग: की० ५-०-० डाकखर्च १–४–०

दूसरा भाग: की० ५-०-० डाकखर्च १–४–०

तीसरा भाग: की० ६-०-० डाकखर्च १–६–०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद–९

विषय-सूची

		पृष्ठ
गांधीजी और अुनकी कार्यपद्धति	प्यारेलाल	३९३
दवाअियां और आहार	विल्फ्रेड वेलॉक	३९४
सत्याग्रहकी मर्यादायें	जे० बी० कृपलानी	३९६
	जयप्रकाशनारायण	३९७
आधुनिक समाजमें स्त्रियोंका कार्य	विनोबा	३९८
स्वदेशी और बेकारी		३९९
आधुनिक समाजमें युद्ध और संघर्ष	डॉ० राजेन्द्रप्रसाद	
टिप्पणियां:		
मानवेन्द्रनाथ राय	म० प्र०	४००
अ० भा० यात्री-सेवा-संघ	राघवदास	४००

www.vinoba.in